माननीय संसद सदस्य, श्री हुक्मदेव नारायण यादव द्वारा विभिन्न अवसरों/समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में लिखित लेखों के संकलन के रूप में प्रकाशित पुस्तक ''चिन्तन प्रवाह'' के विमोचन के अवसर पर 31 अगस्त, 2017 को कांस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. मेरे लिए यह अत्यंत गौरव और सम्मान की बात है कि मुझे माननीय वरिष्ठ संसद सदस्य एवं सदैव गरीबों और सर्वहारा वर्ग की आवाज़ उठाने वाले श्री हुक्मदेव नारायण यादव द्वारा विभिन्न अवसरों/समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में लिखित लेखों के संकलन के रूप में प्रकाशित पुस्तक **''चिन्तन प्रवाह''** का विमोचन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। उनके लेखों को एक संकलन का रूप देने के लिए मैं सम्पादकगण सहित इस पुस्तक के प्रकाशक श्री प्रभात जी को भी साधूवाद देती हूं।

2. हम सब जानते हैं कि श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी के लिए पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति हमेशा प्राथमिकता में रहे हैं। राजनीति में सदैव गांव, गरीब, किसान, मजदूर के हितों की बात करने वाले राजनीतिज्ञ के रूप में उनका नाम सदैव लिया जाता है। उन्होंने उनकी स्थिति, परिस्थिति, उनसे जुड़ी योजनाओं की शुरूआत एवं क्रियान्वयन से संबंधित सभी मुद्दों पर लगभग हर मंच पर एवं संसद में हमेशा निर्भीक होकर आवाज़ उठाई है। उनके जोशपूर्ण एवं उत्तेजक

भाषणों से सभी बहुत प्रभावित होते हैं एवं पॉलिसी मेकिंग करते वक्त वे बातें ज़ेहन में रहती हैं।

3. यह पुस्तक वास्तव में माननीय श्री हुक्मदेव नारायण यादव द्वारा समय–समय पर लिखे गए लेखों का एक अनूठा संग्रह है जिसमें उनका ओजस्वी चिंतन, लेखनी की धार एवं विचारों की तीक्ष्णता स्पष्ट दिखती है। वे समय की डगर पर निडर चलने वाले साहसी पथिक हैं। समाजवाद की डोर पकड़कर राजनीति शुरू करने वाले लोहियावादी एवं जयप्रकाश नारायण जी के अनुयायी का यह सफर बहुत रोचक और यथार्थपरक है।

4. विपक्ष के सशक्त वक्ता के रूप में उन्होंने कई बार सत्ता पक्ष एवं सरकार को झकझोरने एवं गहरी नींद से जगाने का कार्य किया है। संसद का सदन उनके द्वारा कहे गए अकाट्य तर्कों और उनका अपने सिद्धान्तों के प्रति अडिगता का साक्षी है।

5. नीतिगत रूप से वे बेहद मुखर, प्रखर आलोचक, सूक्ष्म विवेचक एवं विशुद्ध अन्तःकरण की बात मानने वाले व्यक्ति के रूप जाने जाते हैं। उनकी लेखनी भी कुल मिलाकर इसी बात को प्रमाणित करती है कि उनके अन्दर कोई लाग–लपेट, दुर्भावना अथवा वैमनस्यता नहीं है। वे सच को सच कहते हैं और झूठ को झूठ।

6. अपने भाषणों में वे बाह्य आडम्बर की चाशनी लपेटते नहीं है, सच को प्रत्यक्ष रूप से उजागर कर देते हैं। उनका यह अन्दाज़ उतना ही देशी एवं सहज होता है। वे अक्सर कहते हैं कि ''हम जो बोते हैं वही काटते हैं। हम अपने भाग्य के विधाता है। व्यंग्य करते हुए वे अक्सर कहते हैं कि ''बोए पेड़ बबूल के तो आम कहां से होय।'' हालांकि यह आलोचनात्मक वाक्य है परंतु उनका प्रयोग उन्होंने बहुत ही कुशलता से किया है।

7. लोकनायक जयप्रकाशजी के बारे में उनके दो पृष्ठों के लेख अत्यन्त प्रभावी हैं। इस बात से हम सब हमेशा सहमत होंगे कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक व राजनीतिक समता के लिए सम्पूर्ण क्रांति हमेशा आवश्यक रहेगी। समाज और व्यक्ति का कायाकल्प सुशासन से ही संभव है। ऐसे कायाकल्प की इच्छा, या ऐसा हो ऐसी भावना, हो सकता है कि बहुत से दिलों में धड़कती हो, बहुत से लोग ऐसा चाहते भी हों, पर उनमें से बहुत कम, शायद बिरले लोग उस इच्छा को अपने राजनीतिक स्वार्थ के आड़े न आते हुए सामने रखते हैं, उस पर चलते हैं, हुक्मदेवजी उन्हीं बिरले लोगों की पंक्ति में अग्रणी हैं।

8. इस पुस्तक में हुक्मदेव जी के संकलित लेख **1993 से 2015** तक के बीच लिखे गए हैं, पर आज की परिस्थिति में उतने ही प्रासांगिक लगते हैं।

9. 1997 को 3 अक्टूबर को जनसत्ता में प्रकाशित उनका लेख **''संकल्प चाहिए कायाकल्प के लिए''** बहुत–कुछ कहता है। जीवन में छोटी–से–छोटी बात से लेकर बड़े–बड़े फैसलों को अनुशासन की सीमा में रखकर जनहित में करना एक मानसिक व भावनात्मक रूप से परिपक्व मन ही कर सकता है। विरोध व अवरोध सह कर सत्य की राह पर चलना आदर्श है और इसी बात को हुक्मदेव जी ने समय–समय पर दोहराया है। यहां मुझे आदरणीय अटल जी की दो पंक्तियां याद आती हैंः–

''क्या हार में, क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं,

संघर्ष पथ पर जो मिले, ये भी सही, वो भी सही।''

मेरे कहने का अभिप्राय है कि हुक्मदेव जी के लेखों और उनकी जीवन शैली में भी हमेशा यह भाव रहा है कि वही काम किया जाए जिसमें सर्वाधिक लोकहित समाहित हो।

10. हुक्मदेव नारायण यादव जी के मन में समाज के हरेक वंचित वर्ग के लिए अपार स्नेह व सोच है। उनको मुख्य धारा में लाना, उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हो, ऐसी नीति निर्माण के लिए उन्होंने हमेशा आवाज़ उठाई है। जो लोग हुक्मदेव जी से परिचित नहीं भी है, इस पुस्तक के माध्यम से वे जान सकेंगे कि समय–समय पर कैसे इन्होंने इस विषय को नीति निर्धारकों व शासकों के समक्ष रखा है। उनकी लेखनी में वही तेज है, जो उनकी वाणी में है।

11. हुक्मदेव जी प्रजातंत्र को बखूबी समझते हैं। प्रजातंत्र में जितनी सत्ता पक्ष की भूमिका होती है, उतनी ही विपक्ष की भूमिका होती हैं। मेरा मत है कि विपक्ष की सक्रिय भूमिका उसे और परिपक्व करती है। सत्ता से मोह व सत्ता की कमजोरियों के बारे में बहुत स्पष्टता से हुक्मदेव नारायण जी निरंतर अपने लेखों में लिखते आए हैं।

12. उनका यह मानना है कि सदन में Debate, Dissent और Discussion की भूमिका सकारात्मक कार्य करती है एवं इस कार्य में व्यवधान का कोई योगदान नहीं है।

13. आपने वर्ष 1996 के अपने एक लेख में बहुत सही वर्णन किया है कि जब तक हम गांव में किसानों व उनके परिवारों के रोज–रोज के struggle को अनुभव नहीं करेंगे तब तक उनके हित की कैसे सोच पाएंगे। जब सोचेंगे तभी उनके जागरण, उन्नति के लिए नीति बनेगी और जन सहयोग मिलेगा। गांधी जी ने घूम–घूमकर भारत में असली हालात देखे और तभी उनके लिए आवाज़ उठाई – **''अन्त्योदय का विचार यहीं से उपजा।'' गांधी जी का सर्वोदय और पंडित दीनदयाल जी का अन्त्योदय इसी बात का परिचायक है। दिल्ली के एसी के भवनों में बैठकर गांव, गरीब, किसानों और मजदूर का भाग्य नहीं बदला जा सकता है। उसके लिए सत्ता के सभी भागीदारों को सजग, सतर्क, सबल एवं व्यावहारिक होना**

होगा एवं स्थिति में बदलाव के लिए भगीरथ प्रयास करना होगा। अब बदलाव दृष्टिगोचर भी हो रहा है क्योंकि प्रयास सकारात्मक दिशा में है।

14. उनके विचारों में डा. राम मनोहर लोहिया जी का समाजवादी दर्शन, पंडित दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और महात्मा गांधी का गांधीवाद और उनके दर्शन का समेकित (integrated) प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। उनके विचार सदैव गरीब, मजदूर, महिला, युवाओं और किसानों को अन्याय एवं अत्याचार के प्रति उठ खड़े होने एवं उन्हें ललकारते प्रतीत होते हैं। उनके भाषण के अंश को इस चुनौती का साक्षी कहा जा सकता हैः–

"मैं हिन्दुस्तान के गांव, गरीब, किसान, मजदूर और देश के नौजवानों से कहता हूं कि आओ, बढ़ो, उमंग से उछाल मारो। एक बार हनुमान के जैसे कूद चलो। उस पार जाओ। या तो अन्यायी, अत्याचारी, जुल्मी, जालिम सत्ता को जलाकर राख कर दो या समुद्र में डूब कर मर जाओ। लेकिन अब चैन से मत बैठो।"

15. पाठकों को इस पुस्तक में विभिन्न मुद्दों पर यादवजी के विचारों को पढ़ने, समझने एवं शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिलेगा। इस संकलन में समाजवाद, आरक्षण, भय, भूख, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, समाज कल्याण, राष्ट्रवाद, अंतर्राष्ट्रीय नीति, आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, परमाणु परीक्षण, डिजिटल कार्यक्रम, प्राकृतिक

आपदाएं एवं उनसे बचाव, किसानों की समस्याएं एवं उनका निदान, युवाओं और महिलाओं की समस्याएं, उनका उत्थान से संबंधित सरोकार, वंचित वर्गों के अधिकार एवं उनके उत्थान सहित विविध मुद्दों पर उनके समग्र और प्रभावशाली विचार वर्णित हैं। उनके विचारों के प्रकटीकरण से पता चलता है कि वे समाज में समानता और सद्भाव के आकांक्षी हैं।

16. मैं एक बार फिर इस तरह के प्रकाशन की पहल करने के लिए श्री हुक्मदेव नारायण यादव जी के साथ–साथ सम्पादक मंडल एवं प्रकाशक को धन्यवाद देती हूं। निरंतर राष्ट्र आराधन कर्म में लगे माननीय हुक्मदेव जी के यशस्वी, खुशहाल, स्वस्थ और दीर्घ जीवन की कामना भी करती हूं।

17. इन्हीं शब्दों के साथ मुझे इस पुस्तक का विमोचन करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और मुझे आशा है कि यह पुस्तक खूब पसंद की जाएगी और पाठकों को उनके विचारों को जानने–समझने एवं शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। ये अनुभव सभी के लिए ही प्रेरणादायक सिद्ध होंगे।

धन्यवाद।